Diploma in Language Examination 2016
Hindi
Paper-II

Time : 3 Hours **Full Marks : 80**

Questions are of value as indicated in margin

1. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक पर निबंध लिखिए – 25

(क) आपका प्रिय लेखक (ख) शांतिनिकेतन का आनंद मेला (ग) राष्ट्रभाषा (घ) रवीन्द्रनाथ ठाकुर

2. निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए – 5×2=10

जीव दुख के भवर में भी आनन्द की अभिलाषा क्यों करता है? जीवन के अंधकार में दीपक क्यों जलाता है? क्या यह वास्तविकता की ओर उसका झुकाव नहीं है? जिन पदार्थों की शक्ति अप्रकाशित रहती है उन्हें जड़ कहते हैं। किन्तु देखो जिन्हें हम जड़ कहते हैं वे जब किसी विशेष मात्रा में मिलते हैं– तब उनमें एक शक्ति उत्पन्न होती है, स्पन्दन होता है जिसे जड़ता नहीं कह सकते। वास्तव में सर्वत्र शुद्ध चेतन है जड़ता कहां? यह तो एक भ्रमात्मक कल्पना है। यदि तुम कहों कि उनका तो नाश होता है और चेतन की सदैव स्फूर्ति-रहती है तो यह भी भ्रम है। सत्ता कभी लुप्त भले ही हो जाय किन्तु उसका नाश नहीं होता। गृह का रूप न रहेगा तो ईंटे रहेंगी, जिनके मिलने पर गृह बने थे। वह रूप परिवर्तित हुआ तो मिट्टी हुई–राख हुई परमाणु हुए। उस चेतन के अस्तित्व की सत्ता कहीं नहीं जाती और न उसका चेतनमय स्वभाव उससे भिन्न होता है। वही एक (अद्वैत) है। यह पूर्ण सत्य है। असत्य का भ्रम दूर करना होगा, मानवता की घोषणा करनी होगी, सबको अपनी समता में ले आना होगा।

(क) जड़ किसे कहते हैं ?

(ख) सत्ता कभी लुप्त नहीं होती तो किस रूप में रहती है?

(ग) पदार्थ की शक्ति अप्रकाशित रहे तो उसे क्या कहते हैं?

(घ) पूर्ण सत्य तक पहुंचने के लिए हमें क्या करना होगा?

(ङ) पठित गद्यांश का एक शीर्षक दीजिए।

3. अपने पिताजी को अपनी सायकिल की आवश्यकता बताते हुए एक पत्र लिखिए ताकि वे उसके लिए रुपये भेज दें। – 10

अथवा

नगरपालिका के प्रधान को अपने मुहल्ले की नाली की सफाई के लिए एक आवेदन कीजिए।

4. संक्षेपण और पल्लवन में क्या अन्तर है? संक्षेपण के सामान्य नियम लिखिए। 10

अथवा

पल्लवन करते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए।

5. 'विशाख' नाटक के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए। 15

अथवा

विशाख का चरित्र-चित्रण कीजिए।

P.T.O.

6. निम्नलिखित अवतरण की व्याख्या कीजिए– 10

किसी भी देश के बुद्धिमान शांति के लिए सार्वजनिक नियम बनाते हैं, किन्तु वह क्या सबके व्यवहार में है? जिस प्रतारणा के लिए शासक दण्ड-विधाता है, कभी उन्हीं अपराधों को स्वयं करके दण्डनायक भी छिपा लेता है।

अथवा

प्रायःदेखा जाता है कि दूसरों के दोष दिखाने वाले घटनाचक्र से जब स्वयं किसी अन्याय को करने लगते हैं तो पशु से भी भयानक हो जाते हैं।